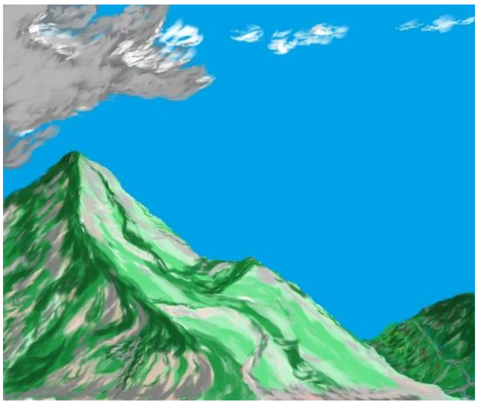
पर्वत और बादल



दिन की धूप थी अलसायी
पर्वत के मन थी वह भायी
नर्म-नर्म हवा की लहरें
बस आँखों में नींद भर आई.

पर्वत सोया ही था कि
आकाश में बादल गिर आये
कुछ काले कुछ मटमैले
पर सब हौले-हौले आये.

वर्षा की नन्ही बूंदों ने
पर्वत को छूआ धीरे से
आँख खुली तो आँख धुली
पर्वत ने पूछा बादल से.

"तुम भी अजब घुमक्कड़ हो
कोई न देखा तुम सा मैंने
कब तुम आते कब तुम जाते
न मैं जानु न कोई जाने."

“तुम से कहूं क्या मैं भाई
बड़ी अजब है मेरी गाथा
मैं कब आता मैं कब जाता
मैं ही निश्चित न कर पता

“मेरा आना मेरा जाना
मेरा रुकना मेरा चलना
नहीं है यह निर्भर मुझ पर
भाई, मैं हूँ बस वायु पर निर्भर.”

इतना कह बादल खिसका
वेग हुआ था वायु का तीखा
पर्वत मन ही मन मुस्काया
“मुझ सा नहीं है कोई भाया.”

मेंढकी का ज़ुकाम

मेंढकी को जब लगा ज़ुकाम
खूब घबराया मेंढक राम.

भागा-भागा मेंढक आया
आकर मेंढकी का सिर सहलाया.

मेंढकी गुस्से से चिल्लाई,
'सिर तुम मेरा छोड़ो भाई.

दौड़े-दौड़े जल्दी जाओ
कोई वैध हकीम लेकर आओ'.

मेंढक झटपट दौड़ा भागा
देखा न कोई पीछा आगा.

इसको पूछा उसको पूछा
जिसको देखा उसको पूछा.

फिर ले आया वैध इक ऐसा
जिसकी पूँछ थी लंबी छोटे कान.

वैध देख मेंढकी चिल्लाई
वैध की सूरत उसे न भायी.

मेंढकी ने किया होहल्ला
भागा वैध उठा पुच्छला.

पानी का डर



नन्हे हाथी को लगता था
पानी से थोड़ा डर
फिर भी हर दिन नदी में
उसको जाना पड़ता था पर.
माँ थी उसकी ज़रा कठोर
गुस्सा आता उसको नन्हे पर
अगर नहाने में वो नन्हा हाथी
करता कभी किन्तु-अगर-मगर.
नन्हे हाथी ने इक दिन देखी
नदी में जाती लंबी नाव
नाव देख उसके मुंह से निकला
'वाह वाह वाह.
ऐसी चीज़ निराली तो मैंने

न देखी थी कहीं अब तक
मुझे भी चाहिये ऐसी नाव
लेकर रहूँगा मैं अपना हक़.'
झटपट आकर माँ से बोला
कही उससे मन की बात
फ़रमाइश सुन माँ झुंझलाई
और सिर पर मारा अपना हाथ.
तभी नदी में बहती देखी माँ ने
कागज़ की इक सुंदर नाव
माँ बोली, 'नदी में जल्दी से जाओ
और पकड़ लो वह बहती नाव.'
नन्हा हाथी दौड़ा झटपट
और भूल गया पानी का डर
बड़ी फुर्ती से लगा तैरने
नाव वो पकड़ न पाया पर.
लौट कर वो माँ से बोला,
'नाव तो बह गई पानी में'
'तुम ऐसे तैर पाओगे, बेटा

सोचा भी न था मैंने सपने में.

तुम्हें आज तो पानी से

लगा न बिलकुल भी डर

मैं तो सदा ही कहती थी

तुम हो सबसे अधिक निडर.'

नन्हा हाथी उछल पड़ा

सुनकर अपनी प्रशंसा

खूब अकड़ कर वह बोला

'माँ, मैं तो हूँ ही ऐसा.'

नोनु चली देखने मेला

नोनु चली देखने मेला
हाथ में पकड़े थी इक केला,
दादू-दादी भी चले साथ में
सब बैठ गये अपनी मोटर में,

मेले में था पर धक्कम-धक्का
नोनु हो गई हक्का-बक्का,
बहुत मचा था मेले में शोर
लोग ही लोग थे चारों ओर,

कहीं पर भालू नाच रहा था
कहीं पर बन्दर उछल रहा था,
मोटा हाथी भी था एक वहाँ
ऊँट भी थे कुछ यहाँ-वहाँ,

झूले लगे थे कई इधर-उधर
छोटे-बड़े बैठे थे उन पर,
कोई पतंग उड़ा रहा था
कठपुतली कोई नचा रहा था,

खाने-पीने की थी दुकानें
खूब सजी थीं, कोई माने न माने,
पर नोनु जी ने बस केला खाया
केला ही था उसके मन भाया,

हाथी की उसने न की सवारी
और ऊँट देख कर वो घबराई,
बैठी न वह किसी झूले पर
झूलों से उसको लगता था डर,

अच्छा लगा उसे बस भालू का नाच

'नाच, नाच, भालू नाच,'

भालू देख कर नोनु चिल्लाई

और खूब ज़ोर से ताली बजाई.

छाता

नन्हें हाथी ने इक छाता पाया

छाता ले वो झटपट आया.

नानी से पूछा उसने आकर
“छाता लेते हैं सब क्यों कर”.

नानी को पर समझ न आया
छाता नन्हें ने कहाँ से पाया.

नानी बोली बड़े प्यार से
“जब भी दिन में पानी बरसे,

छाता लेकर चलते लोग
भीग जाने से उनको लगता रोग”.

नन्हा बोला सुन नानी की बात
“नानी यह तो है अजब ही बात,

वर्षा की बूँदें तो होतीं हैं न्यारी
मुझ को तो वे लगती है प्यारी.

वर्षा में भीगना है मुझको भाता
मुझे न चाहिए छाता-वाता”.

<u>नोनु जी की बस</u>

नोनु जी की है लंबी बस

उस में घुस गये बन्दर दस,

नौ बैठ गये बस में छिप कर

आये थे वो ज़ू से भाग कर,

आठ चढ़ गये फिर छत के ऊपर

नोनु को आया गुस्सा उन पर,

सात ने छत से कूद लगाई

नोनु ने कर दी उनकी धुनाई,

छह भागे तब घर के अंदर

दादी चिल्लाई, ‘आये बन्दर’,

पाँच ने देखे मेज़ पर केले

नोनु बोली, ‘आ जा ले ले’,

चार ने मारा झपटा उस पर

केले मिले नहीं उन को पर,

तीन ने पकड़े नोनु के हाथ

कोई न था तब नोनु के साथ,

दो को नोनु ने खिलाये केले

एक को लेकर चली वह अकेले.

नन्हीं नोनु का घोड़ा

नन्हीं नोनु का नन्हा घोड़ा

नन्हीं नोनु के पीछे दौड़ा,

घोड़े की पूंछ थी लम्बी

लंबे घोड़े जितना लम्बी,

घोड़े ने इक कूद लगाई

लम्बी पूंछ हवा में लहराई,

नोनु ने पकड़ ली पूंछ लपक कर

घोड़ा करने लगा गर्र गर्र गर्र,

सिर के बल गिरा तब घोड़ा

नन्हीं नोनु के पीछे था जो दौड़ा.

नटखट बन्दर



इक बन्दर था थोड़ा नटखट
करता था वह हर दम खटपट,
सबको था वो खूब सताता
उसको था न कुछ आता-जाता,
इक दिन भालू से शर्त लगाई
और इक पेड़ से कूद लगाई,
दूजे पेड़ पर था उसको जाना
पर उसने था यह न जाना,
इक सांप था दूजे पेड़ पर

सोया था वह आँख मूंद कर,

बन्दर ने इक डाल को पकड़ा

सांप ने उसको झट से जकड़ा,

सांप था सोया उसी डाल पर

जिस पर कूदा था नटखट बन्दर

सांप देख कर वो चिल्लाया

सिर के बल वो नीचे आया

भालू की मजबूरी



भालू की थी यह मजबूरी
नाक थी उसकी भूरी-भूरी
आँखें थी कुछ पीली-पीली
साँसें थीं कुछ गीली-गीली
बारिश में था भीगा-भीगा
मन था उसका खीजा-खीजा
करना चाहता था वो आराम
उसे लग गया था ज़ुकाम

<u>नन्हें हाथी ने देखा सपना</u>



नन्हा हाथी था मज़े से सोया

मीठे सपनों में था खोया,

बैठा था वह नदी किनारे

गन्नें पड़े थे कई सारे,

गन्ने चूस रहा था मस्ती में

शोर मचा कहीं बस्ती में,

'भागो-भागो हाथी है आया

हाथी ने है हुड़दंग मचाया',

भय से कांप रहा था हर कोई

निकट न उसके आया कोई,

पर एक बहादुर आगे आया
हाथ में पकड़े डंडा लाया,

डंडा नन्हें के सिर पर दे मारा
उछल पड़ा नन्हा बेचारा,

झटपट देखा चारों ओर
सोचा ‘क्यों मचा है शोर?’

पर कोई दिखा आस न पास
चारों ओर थी घास ही घास,

तभी सिर से कुछ टकराया
नन्हे को तब समझ में आया,

पेड़ के नीचे था वह सोया
मीठे सपनों में था खोया,

पेड़ पर थी बंदरों की टोली
बोले रहे थे वो अपनी बोली,

बंदरों ने था आम से मारा
उझल पड़ा था नन्हा बेचारा,

वहां नहीं थी कोई बस्ती
बंदरों पर थी छाई मस्ती,

वहां नहीं थे गन्नों के ढेर
पर सोते-सोते हो गई थी देर,

नन्हें को अब माँ की सुध आई
घर की ओर तब दौड़ लगाई.